Scientific Innovation Magazine
ISSN : 2584-1157

जैविक वस्त्र अपनाने में विस्तार कार्यक्रमों की भूमिका

दिव्यांशी सिंह[1], डॉ. जया वर्मा[2], डॉ. ऐश्वर्या सिंह[3], प्रियांशी राज[4]

[1]शोधार्थी, परिधान वस्त्र एवं परिधान विभाग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, नवाबगंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश – 208002

[2]शिक्षण सहायक, प्रसार शिक्षा एवं संचार विभाग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, नवाबगंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश – 208002

[3]शिक्षण सहायक, प्रसार शिक्षा एवं संचार विभाग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, नवाबगंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश – 208002

[4]शोधार्थी, परिधान वस्त्र एवं परिधान विभाग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, नवाबगंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश – 208002

संपर्क लेखक : दिव्यांशी सिंह

ई-मेल: sengaranamika69@gmail.com

सार

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा सतत विकास की अवधारणा के अंतर्गत जैविक वस्त्रों का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। जैविक वस्त्र वे वस्त्र हैं, जिनका उत्पादन रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं हानिकारक रंगों के बिना किया जाता है। जैविक वस्त्रों को अपनाने की प्रक्रिया में विस्तार शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह लेख जैविक वस्त्रों के प्रचार-प्रसार, स्वीकृति एवं उपयोग में विस्तार कार्यक्रमों की भूमिका का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द : जैविक वस्त्र, विस्तार शिक्षा, सतत विकास, वस्त्र उद्योग, जागरूकता

प्रस्तावना

भारत में वस्त्र उद्योग ग्रामीण एवं शहरी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। पारंपरिक वस्त्र उत्पादन में

Scientific Innovation Magazine
ISSN : 2584-1157

रासायनिक पदार्थों के अत्यधिक उपयोग से पर्यावरण प्रदूषण एवं मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे में जैविक वस्त्र एक सुरक्षित एवं पर्यावरण-अनुकूल विकल्प के रूप में उभर कर सामने आए हैं,जैविक वस्त्रों को अपनाने हेतु केवल तकनीकी जानकारी ही नहीं, बल्कि उपभोक्ताओं, उत्पादकों और कारीगरों में जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यक है, जिसे विस्तार शिक्षा के माध्यम से संभव बनाया जा सकता है।

जैविक वस्त्र की अवधारणा

जैविक वस्त्र वे वस्त्र हैं जो: जैविक रूप से उगाए गए तंतुओं (जैसे ऑर्गेनिक कॉटन) से बने होते हैं उत्पादन प्रक्रिया में रसायनों का न्यूनतम या शून्य प्रयोग होता है मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए सुरक्षित होते हैं।

विस्तार शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम

विस्तार शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से वैज्ञानिक ज्ञान को समाज तक सरल रूप में पहुँचाया जाता है। विस्तार कार्यक्रमों का उद्देश्य व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना होता है।
वस्त्र क्षेत्र में विस्तार कार्यक्रमों के प्रमुख माध्यम:

- प्रशिक्षण कार्यक्रम
- कार्यशालाएँ
- प्रदर्शनी एवं मेले
- स्व-सहायता समूह (SHGs)
- गैर-सरकारी संगठन (NGOs)
- डिजिटल एवं मोबाइल आधारित विस्तार सेवाएँ

Scientific Innovation Magazine
ISSN : 2584-1157

जैविक वस्त्र अपनाने में विस्तार कार्यक्रमों की भूमिका

1. जागरूकता निर्माण

विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से उपभोक्ताओं एवं उत्पादकों को जैविक वस्त्रों के लाभो स्वास्थ्य सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं गुणवत्ता के प्रति जागरूक किया जाता है।

2. कौशल विकास एवं प्रशिक्षण

ग्रामीण महिलाओं एवं कारीगरों को जैविक तंतुओं की पहचान, जैविक रंगाई एवं परिधान निर्माण का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

3. स्व-रोजगार एवं उद्यमिता विकास

विस्तार कार्यक्रम जैविक वस्त्र आधारित लघु उद्योगों को बढ़ावा देकर स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं।

4. सतत विकास को बढ़ावा

वस्त्रों का उपयोग प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सहायक होता है, जिससे सतत विकास के लक्ष्य प्राप्त होते हैं।

5. नीति एवं योजना कार्यान्वयन में सहयोग

सरकारी योजनाओं जैसे राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम एवं कौशल भारत मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन में विस्तार कार्यक्रम सहायक सिद्ध होते हैं।

समस्याएँ

- जैविक वस्त्रों की अधिक लागत
- सीमित बाजार उपलब्धता
- उपभोक्ता जागरूकता की कमी
- प्रमाणन प्रक्रिया की जटिलता

सुझाव

- विस्तार कार्यक्रमों की संख्या बढ़ाई जाए
- ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित प्रशिक्षण आयोजित किए जाएँ
- डिजिटल माध्यमों का अधिक उपयोग किया जाए
- जैविक वस्त्रों के लिए सरकारी प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की जाएँ

निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि जैविक वस्त्रों को अपनाने की प्रक्रिया में विस्तार कार्यक्रमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विस्तार शिक्षा न केवल जागरूकता उत्पन्न करती है, बल्कि कौशल विकास, स्वरोजगार एवं सतत विकास को भी बढ़ावा देती है। यदि विस्तार कार्यक्रमों को योजनाबद्ध एवं प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो जैविक वस्त्रों का व्यापक स्तर पर प्रसार संभव है।

संदर्भ

i. दांडेकर, वी. एम. (2018). विस्तार शिक्षा के सिद्धांत. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
ii. सुशीला डांट्यागी (2014). Fundamentals of Textiles and Their Care. New Delhi: Orient BlackSwan.
iii. सिंह, के. (2016). विस्तार शिक्षा एवं ग्रामीण विकास. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
iv. Verma, P. (2017). Textile Science and Apparel Design. New Delhi: PHI Learning.
v. FAO (2011). Organic Cotton Production and Sustainability. Rome.
भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय वस्त्र नीति. नई दिल्ली: वस्त्र मंत्रालय।